

आशा अष्टक

263

ASHA AṢṬAKA

नमस्तु वायु ॥ नमस्तु ननु वीन ननु रुद्र रुद्र ॥
नामनी ननु सर्वो यद रुद्रा वस्त्रा रुद्रा वनमा रुद्र ॥
॥ १ ॥ नमस्तु ननु वीन ननु रुद्रा यति रुद्र रुद्र ॥
रुद्रा रुद्रा यति रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ २ ॥
नमस्तु रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ रुद्रा रुद्रा

मुनिक रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ ३ ॥ नमस्तु रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥
रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥
रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ ४ ॥ नमस्तु रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥
रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥
रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ ५ ॥ नमस्तु रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा रुद्रा ॥ रुद्रा रुद्रा

लाकाकमाकाकतिष्ठसुधाकर्षणक्रमा ॥ ६ ॥ तमः ४४
कातवावक्तामवृद्धिः संघनाविता ॥ हकवकालगधव
गतायकूपूनसूता ॥ ७ ॥ तमः सुखितिरुद्धकावयन
ऊरुयुमदति ॥ यत्नालीधयदन्त्यासमिधिकात्ताक
लाकः ॥ ८ ॥ तमः सुवमहाद्यावमानवीनविनाश

नी ॥ हकूटीहकवक्ताकसर्वगुनिसूदती ॥ ९ ॥ त
मः सुवीनतमः कद्वयगुलिविहसिका ॥ हसिका
घदिकानिकवस्वकवाकूला ॥ १० ॥ तमः ४५ सुदिता
ठायमूकटाक्रिपमाविति ॥ हसत्यहसकृतावमान
वत्ताकवसंकनी ॥ ११ ॥ तमः ४६ सुमसूहयालयटला

कर्मक्षेत्रमा॥ वनहृकुटिहंकावसुर्वायदविमाचनि
॥ १२ ॥ नमः शिष्येषु खलु इमं कुरुत रुनरक्षकलु ॥
अमिका रुकुटा धात्रा सुनकि वरक्ष रुव ॥ १३ ॥ नमः
कल्याकरुकरुका लाभा लाभा कनसिद्धि ॥ अली रु
मृदिता वदनि येषु वदनि तासुंति ॥ १४ ॥ नमः शकनरु

३

लाघाकवनरक्षारुकरुकरु ॥ रुकुटी रुकरुकावसुफया
कालुरुदनी ॥ १५ ॥ नमः शिष्येषु रुकुका कनसिद्धि
रुगवनी ॥ स्वाहा पुष्टा मसंयुद्ध महाया ककना ठानि ॥
॥ १६ ॥ नमः शकनरुदिता वदनि येषु वदनि तासुंति ॥ दक्ष
रुनयदत्या सुविद्या रुकावदीपिका ॥ १७ ॥ नमः रुनय

दायाक हंका नाका नवी ऊक ॥ मनू मधुलक लाग हव द
 जय वा विनि ॥ १८ ॥ नमः सुना सुना कान रु विष्णु क
 शक्ति ॥ गाना दिनु कुरु कान नू राघव विष नाथानि ॥
 ॥ १९ ॥ नमः सुना गदा ध्वं नून किन्नर सविक ॥ आ
 वद्ध मूर्दिता लुग कलि इह स्व प्रनाथानि ॥ २० ॥ नमः

४

द्याक संयुक्त नयन युति लु सुत्र ॥ रु व दिनु कुरु कान
 विषम कल नाथानि ॥ २१ ॥ नमः कित्त त्व विद्या शशिव
 शक्ति समन्वित ॥ गुरु वका उय क्राश नागं निषव न कुम
 ॥ २२ ॥ मूल मरु मिदेषा कं नमः स्काने क विंशति ॥ य
 यथ त्वत्तु नाधीमातृ दद्या रु कि समन्वित ॥ २३ ॥ सार्य

वाशारुक्कायस्मनस्सुर्वारुयपद॥सुर्वपायपुसमनी
 सुर्वउर्गकितागनी॥ २४ ॥ अरुथका रुवकुर्गु४ सुफ
 हिजिनकाठिरु४॥ अस्मिन्महत्त्वमासायसी३रुवा
 पद३रु४॥ २५ ॥ विरुतस्यमहत्त्वानेसुवर्गवाथउ
 गनी॥ स्मनसापसुययातिरवादिर्गधीरुसंवदा॥ २६ ॥

एरुहलविषरुर्गनीयनमाकिवितागनी॥ अरुथवा
 र्ववसत्यानीदिस्तिनफारिवरुर्गनी॥ २७ ॥ पूरुकाभा
 लरुपुर्गधनकामालरुहनी॥ सुर्वकामानवाप्राति
 नविपु४प्रतिरुत्थक॥ २८ ॥ ००तिथीसम्यक्वृद्धी
 विभावतरुधिरुमृगल्यार्थकामाया४तमम्कार्गकवि

नरु॥ पृथुयमहंतथा गरुमहंतसुम्यर्षी वृद्धकश्चिद
वपदर्षी प्रपृथुमि॥ सुवत्सुगवातावकार्थी कूर्या
रु॥ पृथुप्रथया कनक्षया॥ अवमूकं रुगवां सुवत्सुग
रुयतिमकदवावरु॥ पृथुत्वंगुरुयकं यथा दवाकां क
स्यहंतयथा प्रसुतविरुमानाधयिष्या॥ अवमूकं सु

वत्सुगुरुयतिः साधुरुगवां नितिरुगवत्तु पत्युषी
रुत्सुवत्सुपत्तदवावरु॥ कथं रुगवत्तु कुरुपूजां वा कुरु
इतितावा इतितावत्तु अदितितावत्तु वक्ति॥ व्याधितावा अ
व्याधितावक्ति॥ अथ खलुरुगवां जानं नवसुवत्सुगुरुय
तिमकदवावरु॥ किंत्वंगुरुयत्तु इतिदत्तया प्रपृथुत्वं

सि॥ अथ सूत्र आगुरुयतिरुगवक्तुमस्तदवाचरु॥ इति
 आहुरुगवक्तुयाध्यावरुपूशावरुशहिकवावरुशहिक
 वावरुलुपुक्तसुयन्नाकद्वययुरुगवांधर्मयध्याय
 यनदाविडसुत्वा॥ अदविडअसूयतिवरुधनधन्यका
 यकोशागमनसुतवागताधुरुवक्तिप्रियमनायसनाश्च

८

दर्शनाधुरुवक्ति॥ दानयकया॥ अक्रीडकाशा॥ अक्रीड
 मतिमुक्तावरुसुखगिलाप्रवातजातनूपनऊकसुमृद्व
 धुरुगवक्ति॥ सुप्रतिष्ठितगुरुदानवरुद्रुवाधुरुगवक्ति॥
 अवसूकरुगवान्स्वचन्द्र॥ गुरुयतिमस्तदवाचरु॥ अकि
 गुरुयकअक्रीडधन्यसुखयथुक्तलुपुकीरुपुययसी

तत्समस्यतवकृधनमारावतिर्धातामरुथगकाइ
हंसस्यैवकृधनमारावतिर्धातामरुथगकाइ
तामधनशीमरुहोताधनविनावाविनायय्यवाफाः
नमादिता॥यनस्यथविस्तृतसुपकाभितामरुमय
नकुलपूजागविषयस्याधनवध॥४५॥परावन४कुल

पूजावाकुलइहितावामानूयानविह०यीति॥अमान
वीनविह०यीति॥नाकुसानविह०यीति॥प्रकानवि
ह०यीति॥विष्मयानविह०यीति॥कुरुजानविह०
०यीति॥यक्रानविह०यीति॥अक्रानकानविह०यीति
॥यावकदशुयाहना॥मूलाहना॥पूजाहना॥वसाहना

ना॥ उरु सिताहावा॥ नविहं० यंकि॥ यस्य वकुलपूजस्य
 हृदगता॥ हृदगता॥ यूरु कगता॥ यूरु किमायगता॥ य
 राताकावाविताधविताअनूमादिता॥ पवत्यधविस्त
 श्रक्षसंपकासिता॥ कूलपूजस्यवा॥ कूलइहिउवादीघ
 गउहितायसुरवाय॥ अमायहंविष्यकि॥ यंस्थमावह

१०

धनाधावशीरथागतलक्ष्मीकृत्यानावर्कयह॥ ३
 एकवाहद्विवाहविधिवदुंरथवागस्यद्वयनामोक्तमना
 प्रयत्नागत्यधायदृष्टिंयाकयह॥ पीतारुथगतमा
 सन॥ पीतांदुहप्रहृफा॥ पीतारुधम्मप्रहृफा॥ पीता
 रुं संधप्रहृफा॥ पीताधर्मरुमकस्यासुयना॥ कश्

थ॥ सुनूपरुडवकि॥ मरुसुअनअवयस॥ उइदनि
 सुसुवकि॥ धासवकिधनवकि॥ थीमकि॥ प्रलामकि॥
 अमसविमस॥ वरसुवयमस॥ अननसुधनसु॥ वि
 धकशि॥ अरुसुमकस॥ धिधिमधूधुस॥ कननरुन
 वा॥ ऊऊडक२वर्लनी॥ निष्ठादनि॥ वरुधनसागवाने॥

११

र्धाधातामरुथाग॥ मरुसुनानुसुन॥ सुर्वकथाक
 थागकसुत्यमरुसुनध॥ मसुत्यमरुसुन॥ संधसुत्य
 मरुसुन॥ कठ२पूद२पूनय२रुनरुनदि॥ सुमंज
 थ॥ धाकमकि॥ मरुलुमकि॥ गुरुडमकि॥ आगथु
 गेडसुमयमरुसुनसुहा॥ आवनदा॥ मरुसुनसुहा॥

हा॥ प्रणवमनूस्मनस्वाहा॥ धृतिमनूस्मनस्वाहा॥
 विजयमनूस्मनस्वाहा॥ सर्वसुखविनयमनूस्मन
 स्वाहा॥ ॐ श्रीवसुध्वानस्वाहा॥ ॐ सुवसुध्वानस्वाहा
 ॐ वसुध्वानस्वाहा॥ ॐ यैसाकूलपूज्यवसुध्व
 नानामध्वानशीयस्याध्वानस्थपण्डितवशनागशुद्धि

१२

क्रमनक्षकानपुरुवति॥ यश्चकूलपूज्यं मावसुध्व
 नानामध्वानशीमनुपदातिरुथागतातामजुह्वानसि
 न्यर्षवृद्धानीपूजाकृत्वा॥ प्रकनाशमावरुयह॥ क
 स्यमहापूत्रययामाययाध्वानयागुरुयतिपूत्रयक
 सर्वध्वान्यश्चसर्वधीहिहिश्चसर्वापदवाधनाशयति॥

तनहिकुलपूजददर्शिमयावसूधानानामध्वनशीध्वनय
वावयपनरुच्यविरुनदासंपकाशयह॥साधूरुगवीनि
ति॥सूत्रवागूहयति॥हृष्ट॥उष्ट॥उदयज्जलमनापः
मदिक॥पीतिसामनस्यजातारुगवकमरुदवाचरु॥उ
रुहीनामरुगर्वपङ्कीहृताध्वनिकावाचिता॥विरुनदा॥

संयुक्तागयिष्यामि॥ अथ खलु सूत्रं श्रीगुरुयतिरुग-
वतमनकठाकसुहृदपदकमीरुह्यरुगवतं ४ यादोहि
नसावन्दित्वा रुगवतकान्तिकायकाकं ॥ अथ खलु रुग-
वानां युष्मकं मानन्दमासक्तयकं ॥ गच्छन्मानन्दस-
वदस्यगुरुयकं वागभवन्निपूधुम्यगमधान्यसमृद्धं ॥

वत्तसमृद्धी॥महाकाशकाष्टागवानिसुयविपूर्णुति॥
 अथखल्वापूष्मानानन्दारुगवक्तृपुनिसुयश्चयनका
 शम्बीमहानगनीयनसुवदस्यागवर्तानायसंकम्पाः
 लीकनसविष्वादाक्रीकंपनिपूर्णुधान्यसमृद्धी॥वत्तस
 मृद्धी॥महाकाशकाष्टागवानिसुयविपूर्णुति॥दृष्टा

१४

रसुवसु३३दृगपमदिक३आरुमना३यनरुगवास्तु
 नायसंककाक३॥अथखल्वापूष्मानानन्दाविस्तर३षी
 तिसामनस्यकाकारुगवक्तृमक्तदवावहू॥काहु३३क३
 पत्यया३यनरुगवास्तुवदागृहपति॥महाधन्यमहा
 महाकास्तुकाष्टागवान३धन्यधन्यसमृद्धसमृद्धु३॥रुग

वा नाह ॥ अथ २ कलु पुरु सुवन्दा गुरुपति धाविता वना
 नयैव सुधा वा नाम धावती उरुहीता ॥ धाविता वा विता
 पनस्य विस्तुनदा संपका सिता नानन्दत्वमप्युरु
 धाव सुधा वा नाम धावती धावयवा वयदभाययनस्यः
 विस्तुनदा संपका सुय ॥ नाह मानन्द समनूय धामि ॥

१५

सदवकलाक समानक सुवम कठामुवदी काया पजाया
 ॥ यः सा विद्यामन्यथावदद्विय विवर्ति कया दत्ति कम
 नू ॥ अह या हर्न जानन्द धावती मरुपदा नवकलीनक
 काल सुलानां भूति पथ नागकुंति ॥ त कस्य रुता २ सुवक
 थागतानाम घवाय सुवक थागत वरुं पंका सिता नूमा

दितापलावितापसुक्ता॥ उक्तातीहता॥ अथवायितासा
 धरुगवन्निद्यापूष्यानातनदाकस्योवलायीमितागमथ
 मलायत॥ अविनियारुगवावृद्धधर्माप्यविकि
 या॥ अविनियारुपसंभारोपाकस्याप्यविकिया॥ साक्षा
 कानयसुर्वहुधर्माजघनंयना॥ यानेगमिदुर्लभाः

१३

५१३
 कावृद्धवीनमाहृत॥ अथस्वरायुष्यानातनदाहृत
 सुउदयज्जलमनापीतिसोमनस्यज्जलाहृगवकमलद
 वावह॥ कथंरुगवंधनयाम्यहंधर्मयथोय्यी॥ रुगवान
 ह॥ सुवदाहृतयनियविहृत्ययिधनयसुर्वधनधः
 न्यमित्यपिधनय॥ सुर्वकथगकपसुक्तावहृधानसीः

कल्पमित्यपि धनयः ॥ ॐ दमया बहू गवाना रुमना अ
 यस्मान्नाने रुवलिङ्ग वा रुववाधिसुत्वा सुदमा नूया
 हनगन्धर्वयत्नाकां रुगवता लाघितमत्पुन नयत्रिनि ॥
 आर्यवर्धुधानासंधावली सुमाकः ॥ २० ॥ नमा
 मंरुनाथया ॥ चवसमया पूतमंकास्मिन्मय रुगवीव

१०

ॐ नमो भगवते
 वासुदेवाय

263